International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 05 May- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''सरदार भगत सिंह एक चिन्तक के रूप में''

कमल चौधरी

शोधार्थी

एम0एम0पी0जी0 कॉलिज, मोदीनगर

सारांश

सरदार भगत सिंह एक अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनका व्यक्तित्व उनके विचारों एवं उद्देश्यों का दर्पण था। भगत सिंह के अत्यन्त निकट की सहयोगिनी क्रान्तिकारिणी श्रीमती दुर्गादेवी वोहरा के अनुसार, ''भगत सिंह का अपना निखरा हुआ, मंजा हुआ व्यक्तित्व था, जो सर्वथा उसके सादे लिबास और भावपूर्ण व्यवहास से फूट पड़ता था।''[1]भगत सिंह के व्यक्तित्व को संवारने व निखारने में उनके द्वारा पढ़ी गयी विभिन्न प्रसिद्ध पुस्तकों का योगदान सराहनीय है। वह व्यक्तित्व को बाह्य आकर्षण जैसे पोशाक आदि से सजाने के स्थान पर विचारधारा द्वारा व्यक्तित्व को आकर्षित बनाने के विचार से अधिक सहमत थे। इसलिए प्रायः देखा जाता था कि उनकी पोशाक चाहे फटी अवश्य हो, किन्तु पास में कोई न कोई मूल्यवान प्रसिद्ध पुस्तक अवश्य होती थी। इसके अतिरिक्त सरदार भगत सिंह सफल लेखक और प्रभावशाली वक्ता भी थे।भगत सिंह उद्देश्यवादी लेखक थे। वह उद्देश्य था जनता को क्रांति के लिये तैयार करना।

प्रस्तावना

सरदार भगत सिंह एक समाजवादी चिन्तक थे। उन्होंने विश्व के अनेक विचारों का अध्ययन किया। जेल में सरदार भगत सिंह ने चार पुस्तकें लिखीं। दुर्भाग्यवश केवल एक पुस्तक Why I am an athesist, को छोड़कर अन्य तीन नष्ट हो गयीं। वे चार पुस्तकें थी (1) क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास, (2) Why I am an athesist, (3) किसी पुस्तक का अनुवाद एवं (4) आत्मकथा। सरदार भगत सिंह के अध्ययनशील चरित्र का वर्णन करते हुए दुर्गाभाभी ने कहा, ''इसके प्रतिदिन के जीवन का कार्यक्रम था केवल अध्ययन, ऐसा अध्ययन जो इन्हें सर्वांग और सम्पूर्ण बना सके। राजनीति, इतिहास तथा अन्य विषयों पर भी अधिकार था।[2]भगत सिंह से पूर्व क्रांतिकारियों का उद्देश्य केवल स्वतंत्रता प्राप्ति ही था। किन्तु स्वतंत्रता के वास्तविक रूप से यह क्रांतिकारी परिचत नहीं थे। इसके अतिरिक्त क्रांतिकारियों ने अपने विचारों से जनता को अवगत कराने की चेष्टा भी नहीं की थी। फलस्वरूप जनता की सहानुभूति उनके साथ नहीं के समान थी।सरदार भगत सिंह का हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और गुरूमुखी पर समान अधिकार था। गुरूमुखी और उर्दू की पत्रिका ''कीति में क्रांतिकारी शहीदों की जीवनियां भगत सिंह ने नियमित लिखी थीं।''आज लोग इन महान आत्माओं को भूल चुके हैं, उन्हें मूर्ख और पथभ्रष्ट तथा आदर्शवादी बताते हैं, परन्तु कहां हैं आज वह उत्साह? कहां है वह निर्भीकता और तत्परता। आज कितने हैं जो उसी प्रकार फांसी के तख्ते पर प्राण दे सकेंगे?[3]

मुख्य शब्द

सरदार भगत सिंह, क्रान्तिकारी, मैं नास्तिक क्यों (Why I am athesist),स्वतंत्रता आन्दोलन, बी0के0 दत्त, दुर्गा भाभी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 05 May- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा सरदार भगत सिंह को एक चिन्तक के रूप में भी दिखाने का प्रयास किया गया है क्योंकि अधिकांशतः भगत सिंह को बम व पिस्तोल के साथ ही जोडा जाता है जबकि भगत सिंह सदैव अपने पास कोई भी एक महत्वपूर्ण पुस्तक रखते थे। इसलिए उन्होंने अपनी कार्य–प्रणाली को तीन भागों में विभाजित कर रखा था। पहला भाग था, जनता के सोय विचारों पर हल्की चोट देकर उन्हें जागरूक बनाना, द्वितीय भाग, जनता को समस्त जानकारी देना और तृतीय या अंतिम भाग था जनता को प्रेरणा देना कि जो कुछ करके दूसरों ने हासिल किया वह तुम भी कर सकते हो।

मुख्य पाठ

भगत सिंह पहले क्रांतिकारी थे जिन्होंने जो प्रमुखता बम के को दी वही बुलेटिनों (समाचारों) को भी दी। अपने कार्य को अपनी विचारधारा को समाचारों के द्वारा जनता तक पहुंचाया। भगत सिंह प्रथम क्रांतिकारी थे जिन्होंने क्रांति को परिभाषित किया। इसके अतिरिक्त समाजवाद, धर्म, राजनीति तथा अन्य विषयों में अपने स्पष्ट विचार जनता के समक्ष रखकर क्रांतिकारियों को एक नया रूप दिया। भगत सिंह ने 1923 में क्रांतिकारियों को सम्मिलित करके ''नौजवान भारत सभा'' की स्थापना की। यह सभी क्रांतिकारियों का खुला मंच थी। भगवती चरण और भगत सिंह द्वारा बनाये गये सभा के नियम आज ऐतिहासिक दस्तावेज बन गये हैं।[4]''नौजवान भारत सभा, लाहौर'' नाम से जो घोषणा पत्र निकाला गया उसमें सरदार भगत सिंह ने देश के नवयुवकों से देश सेवा की अपील की।

सरदार भगत सिंह से पूर्व क्रांतिकारी अपने–अपने क्रांतिकारी कार्य करते थ, तत्पश्चात् गुमनामी के वातावरण में खो जाते थे। इसी कारण जनता की सहानुभूति उनके साथ नहीं थी। जनता के ह्रदय में भी उनकी छवि एक अपराधी के रूप में ही थी। सान्डर्स वध के बाद भगत सिंह ने जो ''हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना'' के नाम से पर्चा बांटा, उसमें लिखा था, ''आज संसार ने देख लिया है कि हिन्दुस्तान की जनता निष्प्राण नहीं हो गयी है और यह प्रमाण देश के उन युवकों ने दिया है जिनकी स्वयं देश के नेता निन्दा और अपमान करते हैं। मनुष्य का रक्त बहाने के लिए हमें खेद है। परन्तु क्रांति की वेदी पर कभी–कभी रक्त बहाना अनिवार्य हो जाता है। हमारा उद्देश्य एक ऐसी क्रांति से है जो मनुष्य के शोषण का अंत कर देगी।''[5]

दिल्ली की सेशन जज मिडल्टन की अदालत में 6 जून 1929 को दिये गये अपने ऐतिहासिक बयान में उन्होंने क्रांति से अपना अभिप्राय पूछने पर अदालत में कहा, ''क्रांति में घातक संघर्षों का अनिवार्य स्थान नहीं है, न उसमें व्यक्तिगत रूप से प्रतिशोध लेने की ही गुंजाइश है। क्रांति बम और पिस्तौल की संस्कृति नहीं है। क्रांति से हमारा प्रयोजन यह है कि अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहिए। क्रांति मानव जाति का जन्मजात अधिकार है। इतने महान ध्येय के लिए कोई भी बलिदान बड़ा नहीं माना जा सकता। हम क्रांति के उत्कर्ष की संतोषजनक प्रतीक्षा करेंगे।''[6]

क्रांतिकारियों पर लगाया गया यह आरोप कि उनके समक्ष मानवीय जीवन का कोई मूल्य नहीं होता था। एकदम निराधार है।भगत सिंह न बी०के० दत्त के साथ जारी किए गए एक संयुक्त वक्तव्य में कहा था, ''हम मानवीय जीवन को अकथनीय पवित्रता देते हैं, मानवता की सेवा में किसी को हानि पहुंचाने की अपेक्षा शीघ्र ही अपने स्वयं के जीवन को खत्म कर देंगे।'' सरदार भगत सिंह ने अपने ऊपर लगाये इस आरोप को भी निराधार बताया कि बम उन्होंने हत्या के उद्देश्य से फेंके थे। जस्टिस फोर्डके समक्ष बहस के उत्तर में उन्होंने कहा, ''हम उन बमों की सीमित शक्ति जानते थे और किसी को भी चोट न लगने देने के लिए हमने हर सम्भव सावधानी बरती थी।''

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 05 May- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उपरोक्त कथन को स्पष्ट करते हुए सरदार भगत सिंह ने कहा, ''तथ्य स्वयं ही अपनी कहानी कहते हैं और उद्देश्यों की परख उस काम के परिणाम को देखकर ही करनी चाहिए न कि कल्पित परिस्थितियों और मनमानी धारणाओं के आधार पर।''

सरदार भगत सिंह के अनुसार उनके व उनकी पार्टी के कुछ निश्चित आदर्श थे। इस आदर्श को पाने के लिए कुछ साधन अपनाने आवश्यक थे जिसे वह समय–समय पर अपनाते थे। सरदार भगत सिंह को ऐसा कोई भ्रम नहीं था कि बमों या पिस्तौल के प्रयोग से ही क्रांति आ जायेगी, या ऐसा करना क्रांति की ओर एक आगे बढ़ा हुआ कदम होगा।एक अन्य क्रातिकारी श्री भगवती चरण वोहरा के साथ जारी किये गये ''बम का दर्शन'' नाम के पर्चे में आतंकवाद को परिभाषित करते हुए लिखा, ''आतंकवाद क्रांति का एक दौर है। एक आवश्यक दौर। आतंकवाद एक पूर्ण क्रांति नहीं है और आतंकवाद बिना क्रांति पूर्ण नहीं होती।''

उस समय सरदार भगत सिंह एवं उनके क्रांतिकारी साथी आतंकवाद से स्वयं क्या समझते थे, वह लोग जनता के समक्ष स्वयं को किस रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे, इस बात को विस्तार पूर्वक कामरेड शिववर्मा ने बताते हुए कहा, ''आतंकवाद एक गलत शब्द है जो क्रांतिकारियों के लिए प्रयोग होता है। हमारा आतंकवाद में विश्वास नहीं था। उस समय में हम लोगों के काम करने का मुख्य तरीका अंग्रेज अफसरों और उनके भारतीय सहयोगियों में आतंक फैलाना एक उपाय था, लक्ष्य नहीं था।''

ड्रीमलैंड'' नामक एक अंग्रेजी काव्य पुस्तिका की भूमिका में भगत सिंह ने लिखा है, ''यह प्रसिद्ध ही है कि मैं आतंककारी रहा हूँ, परन्तु मैं आतंककारी नहीं हूँ। मैं एक क्रांतिकारी हूँ, जिसके कुछ निश्चित विचार और निश्चित आदर्श हैं, जिसके सामने एक लम्बा प्रोग्राम है।'' इसी प्रोग्राम के अन्तर्गत उन्होंने अपनी विचारधारा को स्पष्ट करते हुए कहा, ''देश को स्वतंत्र करना है। स्वतंत्रता के पश्चात् एक नवीन भारत का निर्माण होगा। झोपड़ियों के स्थान पर आलीशान बिल्डिंगों का निर्माण होगा। नग्न व भूखे लोगों को भोजन व कपड़े दिये जायेंगे।''[7]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस देश का भविष्य कैसा होगा ? क्या जनता को आर्थिक व सामाजिक स्वतन्त्रता भी प्राप्त होगी ? तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण का अंत, इन पक्षों पर सर्वप्रथम भगत सिंह ने विचार किया। सन् 1926–27 में भगत सिंह का मत था कि आतंकवाद क्रांन्तिकारी पार्टी के साधनों में एक आवश्यक साधन है। किन्तु साथ ही भारत की समस्याओं के गम्भीर अध्ययन के आधार पर उन्हें यह भी अनुभव हुआ कि भारत को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की ही नहीं बल्कि, आर्थिक व सामाजिक स्वतंत्रता की भी आवश्यकता है।सरदार भगत सिंह ने अपने साथियों के विरोध के बाद भी अपनी पार्टी ''हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन'' में ''सोशलिस्ट'' शब्द जोड़कर अपनी सामाजिक विचारधारा की घोषणा कर दी थी। ''सोशलिस्ट शब्द इस बात का प्रतीक होगा कि हम किस प्रकार का शासन देश में चाहते है। आज के युग में इस बात का स्पष्टीकरण होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि हम शनैः–शनैः अपने आन्दोलन को जनता का आन्दोलन बना देना चाहते हैं, यही हमारा अन्तिम लक्ष्य भी है।

फ्रांस, आयरलैंड व रूस की क्रांतियों के गहन अध्ययन ने सरदार भगत सिंह की विचारधारा को एक नया मोड़ दिया। विशेष रूप से सोवियत रूस के मजदूरों, किसानों द्वारा समाजवादी क्रांति को और सुदृढ़ बनाने में एवं समाजवाद के स्वप्न को साकार करने में उनके इसी तीव्र प्रगति के अध्ययन ने उनको और उनकी विचारधारा को सोवियत रूस एवं समाजवाद दोनों के ही निकट कर दिया था। भगत सिंह द्वारा लगाया नारा ''गाड सोवियत गाइड अवर वे'' इस बात का स्पष्ट सूचक है कि वह रूस और वहां के मजदूर वर्ग को ही ईश्वर के रूप में मानने लगे थे।

सरदार भगत सिंह द्वारा लगाया गया नारा ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' और ''साम्राज्यवाद का नाश हो'' ये दोनों नार भारतीय किसानों तथा मजदूरों की पूर्ण आर्थिक मुक्ति के साथ अविभाज्य रूप से जुड़े हुए थे। मुकदमें के दौरान उन्हें अपने विचारों को स्पष्ट करने का अवसर मिला। दिल्ली की अदालत में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 05 May- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उन्होंने कहा, ''श्रमिक वर्ग समाज का वास्तविक आधार है। लोक प्रभुता की स्थापना श्रमिकों का अंतिम ध्येय है। इन आदर्शों तथा इस अवस्था के लिए हम हर उन कष्टों का स्वागत करेंगे जो हमें न्यायालय द्वारा दिए जायेंगे।''

क्रांतिकारी लाला रामसरन दास की अंग्रेजी काव्य पुस्तक ''ड्रीमलैंड'' की भूमिका में भगत सिंह ने लिखा है, ''भविष्य के समाज में अर्थात् कम्युनिस्ट समाज मे जिसका हम निर्माण करना चाहते हैं, हम धर्मार्थ संस्थाएँ स्थापित करने नहीं जा रहे हैं, बल्कि उस समाज में न गरीब होंगे, न जरूरतमंद, न दान देने वाले।''[8]

मुकदमें के फैसले की आखिरी सुनवाई के कुछ ही दिनों पश्चात् 1 फरवरी 1931 को साथियों के नाम जेल से संदेश भेजते हुए सरदार भगत सिंह ने कहा था, ''क्रांति से हमारा अर्थ है वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंकना। इसके लिए राज्य–शक्ति पर अधिकार करना जरूरी है। अभी राज्य तंत्र एक विशेष सुविधा प्राप्त वर्ग के हाथों में है। जनता के हितों की रक्षा और अपने आदर्श को यथार्थ में बदलना, यानी कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों के अनुसार समाज की नींव रखना, इन सबके लिए, यह जरूरी है कि इस यंत्र पर हमारा ही अधिकार हो।''[34]

3 मार्च 1931 को भगत सिंह ने जेल विभाग को दो बादामी कागज के टुकड़ों पर पंजाब के गवर्नर को एक चुनौती देने वाला संदेश लिखा व उसे चोरी से जेल के बाहर भिजवाया, उसमें लिखा था, ''यह युद्ध निरंतर नई शक्ति, निर्दिष्ट उत्साह तथा अदम्य दृढ़ता से चलता रहेगा। जब तक कि सोशल रिपब्लिक की स्थापना नहीं हो पाती तथा वर्ममान सामाजिक व्यवस्था का स्थान सार्वजनिक वैभव पर आधारित सामाजिक व्यवस्था नहीं ले लेती। निकट भविष्य में ही अंतिम निर्णायक युद्ध लड़ा जायेगा और अंतिम निष्कर्ष प्राप्त होंगे।

अपने अंतिम दिनों में वह मजदूरों और किसानों को संगठित करने की समस्या के बारे में ही ज्यादा सोचते थे। जिसका प्रमाण हमें उनके द्वारा अपने साथियों को लिखे संदेश में मिलता है। जिसमें उन्होंने देश के संघर्ष को ''मजदूरों और किसानों'' के संगठन की शक्ति से चलाने की बात की थी। भगत सिंह ने स्पष्ट रूप से यह भी ऐलान किया था, ''यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमको बमों और पिस्तौल से लाभ नहीं होगा, हि०सो०रि०एसो० के इतिहास से यह स्पष्ट है। हालांकि कुछ परिस्थितियों में उसकी इजाजत दी जा सकती है। हमारा मुख्य उद्देश्य मजदूरों और किसानों को संगठित करना ही होना चाहिए।''

भगत सिंह ने अपना जीवन समाजवाद को समर्पित कर दिया। उसने केवल ब्रिटिश व्यक्तियों के विरूद्ध विद्रोह नहीं किया बल्कि वह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अत्याचार के विरूद्ध लड़ा जो कि उसके देखवासियों का शोषण कर रहा था।

फाँसी के कुछ दिन पहले जेल अधीक्षक के द्वारा पंजाब गर्वनर के नाम अपने पत्र में उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा था कि, ''अति शीघ्र अंतिम संघर्ष के आरम्भ की दुदुभी बजेगी। साम्राज्यवाद और पूंजीवाद अपनी अंतिम घड़िया गिन रहे हैं। हमने संघर्ष में हाथ बटाया था और हमें अपने कार्य पर गर्व है।''

आने साथी क्रांतिकारी सुखदेव को लिखे पत्र में उन्होंने कहा, ''तुम और मैं जीवित न रहें, किन्तु हमारी जनता जियेगी। मार्क्सवाद और कम्युनिस्ट के कारण ही अवश्य जीत होगी।'' सरदार भगत सिंह ऐसे प्रथम क्रांतिकारी थे जिन्होंने समाजवाद के प्रश्न को क्रांतिकारियों व जनता के समक्ष सर्वप्रथम उठाया। इस प्रकार सरदार भगत सिंह प्रथम ऐसे क्रांतिकारी थे जिन्होंने उस समय समाजवाद की आवश्यकता पर ध्यान दिया व उसे जनता के समक्ष पहुंचया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 05 May- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि भगत सिंह के विचार और क्रांति का उद्देश्य ''स्पष्ट रूप से अन्याय पर खड़ी हुई वर्तमान व्यवस्था'' को बदलना था। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह कोई भी मार्ग व साधन अपनाने को सहर्ष तैयार थे। उन्होंने कहा भी था, ''हम तरूणाई को इसी क्राति की बेदी पर होम करने लाये हैं, क्योंकि इतने गौरवशाली उद्देश्य के लिए कोई भी बलिदान बहुत बड़ा नहीं है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. श्रीमती दुर्गा देवी वोहरा द्वारा दिनांक 27.06.1981 को लखनऊ में लिए गए साक्षात्कार से उद्दृत अंश।
2. दुर्गा भाभी से उनके निवास स्थान लखनऊ पर दिनांक 27.06.1981 को ली भेंटवार्ता से उद्दृत अंश।
3. सिन्धु, संकलन वीरेन्द्र,*''युग दृष्टा भगत सिंह और उनके मृत्युंजय पुरखे''* भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, 1968, पृष्ठ 320
4. सिंह, सरदार कुलतार, *"A Revolutionary Shaheed (They Died so that India May Live")*,सूचना एवं प्रसारण विभाग, चण्डीगढ़, 1981, पृष्ठ 5
5. सौन्डर्स वध के पश्चात् लाहौर में हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना द्वारा जारी किए गए नोटिस से उद्दृत अंश। पर्चा अंत में संलग्न।
6. जस्टिस मिडल्टन की अदालत में दिया गया ऐतिहासिक बयान *''स्मारिका से उद्दृत''*, पृष्ठ 179–80, प्रकाशक सरदार भगत सिंह शहीद स्मारिका समिति, राष्ट्र भाषा प्रेस, किदवई पार्क, आगरा–2, 1981
7. सान्याल, जितेन्द्र नाथ, *''अमर शहीद सरदार भगत सिंह''*, क्रांतिकारी प्रकाशन, मिर्जापुर, 1970, पृष्ठ 37
8. वैशम्पायन, विश्वनाथ, *''अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद''*, ललित प्रेस, वाराणसी, 1967, पृष्ठ 62